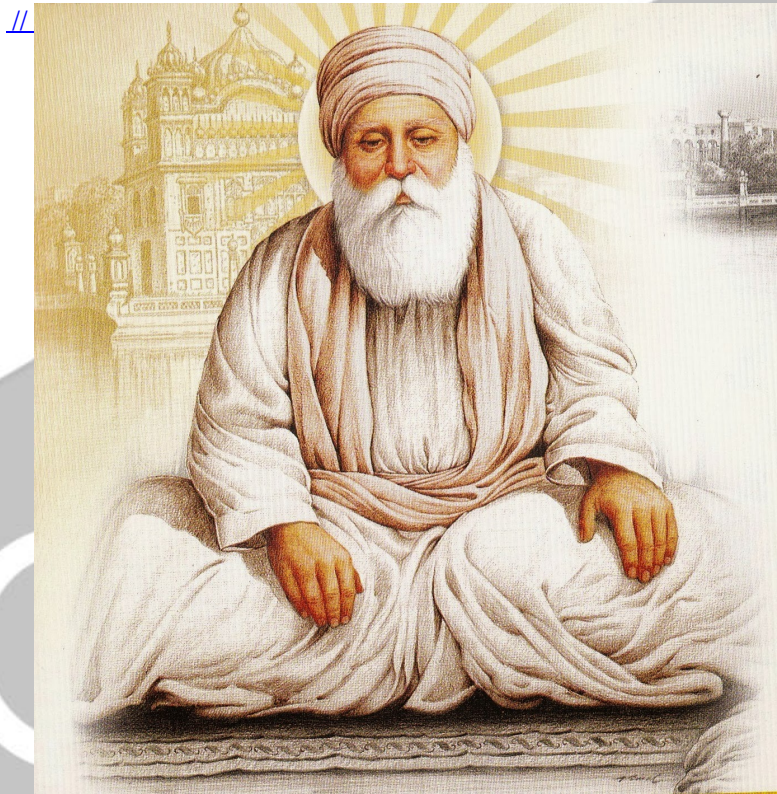


## गुरु अमरदास का 450 वाँ ज्योतजिोत दविस

स्रोत: TT

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में तीसरे सखि गुरु, गुरु अमरदास जी का 450 वाँ ज्योतजिोत दविस मनाया गया ।



### श्री गुरु अमरदास जी कौन थे?

#### परचिय:

- अमृतसर ज़िले के बसरके में वर्ष 1479 में जन्मे **श्री गुरु अमरदास जी** का पालन-पोषण एक रूढ़िवादी हट्टि परिवार में हुआ था ।
- वह **गुरु नानक देव जी** की गुरबानी से बहुत प्रेरति हुए और उन्होंने **गुरु अंगद देव जी** को अपना आध्यात्मिक मार्गदर्शक बना लिया ।
- मार्च 1552 में 73 वर्ष की आयु में इन्होंने तीसरे **गुरु (गुरु अंगद जी के बाद)** के रूप में नियुक्त किया गया, इन्होंने **गोइंदवाल में अपना मुख्य केंद्र स्थापति किया** ।

#### प्रमुख योगदान:

- **गुरु अमरदास जी** ने सखि धर्म की शकिषाओं के प्रसार को सुगम बनाने के लिये सखि समुदाय को **22 प्रशासनिक ज़िलों (मंजयियों)** में वभिाजति किया ।
- इन्होंने समानता और समभाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से, आगंतुकों से मलिन से पूर्व भोजन ग्रहण को महत्त्वपूर्ण माना एवं इसके लिये **गुरु के लंगर' (सामुदायिक रसोई)** की परंपरा को सुदृढ़ किया ।
- **सम्राट अकबर** के साथ इनके संवाद के उपरांत **गैर-मुसलमानों** के लिये **तीर्थयात्री कर** को समाप्त कर दिया गया था जिससे पारस्परिक संबंधों में सुदृढ़ता आई ।

- इन्होंने सामाजिक अन्याय के वरिद्ध सक्रिय अभियान चलाया और सखियों में सती प्रथा एवं परदा प्रथा को समाप्त किया।
- इन्होंने आनंद कारज विवाह समारोह की शुरुआत की।
- इनकी वरिासत एवं अंतमि वर्ष:
  - गुरु अमरदास जी ने गोइंदवाल साहबि में एक बावड़ी का नरिमाण कराया, जसिसे यह एक महत्त्वपूरण सखि तीरथ स्थल बन गया।
  - इन्होंने 869 सबदों की रचना की (हालाँकि कुछ वरिरण बताते हैं क उनकी संख्या 709 थी), जनिमें आनंद साहबि भी शामिल है और गुरु अरजुन देव जी ने इन सभी सबदों को गुरु ग्रंथ साहबि में शामिल किया।
  - 1 सतिंबर, 1574 को 95 वर्ष की आयु में उनका नधिन हो गया और वे एक महत्त्वपूरण वरिासत छोड़ गए जो आज भी सखि समुदाय को प्रेरति कर रही है।

सखि गुरु और उनके प्रमुख योगदान		
गुरु	अवधि	प्रमुख योगदान
गुरु नानक देव	1469-1539	सखि धर्म के संस्थापक; गुरु का लंगर शुरू किया (सामुदायिक रसोई); बाबर के समकालीन; 550 वीं जयंती करतारपुर गलियारे के साथ मनाई गई।
गुरु अंगद	1504-1552	गुरु-मुखी लपि का आवधिकार; गुरु का लंगर (सामुदायिक रसोई) की प्रथा को लोकप्रिय बनाया।
गुरु अमर दास	1479-1574	आनंद कारज विवाह की शुरुआत की, सती प्रथा और परदा प्रथा को समाप्त किया, अकबर के समकालीन थे।
गुरु राम दास	1534-1581	वर्ष 1577 में अमृतसर की स्थापना की; स्वर्ण मंदिर का नरिमाण शुरू किया।
गुरु अरजुन देव	1563-1606	वर्ष 1604 में आदि ग्रंथ की रचना की; स्वर्ण मंदिर का नरिमाण पूरा किया गया; जहाँगीर द्वारा इसका नरिमाण कराया गया।
गुरु हरगोबदि	1594-1644	सखियों को एक सैन्य समुदाय में परिवर्तित किया; अकाल तख्त (सखि धर्म की धार्मिक सत्ता का मुख्य केंद्र) की स्थापना की; जहाँगीर और शाहजहाँ के वरिद्ध संघर्ष किया।
गुरु हर राय	1630-1661	औरंगजेब के साथ शांति को बढ़ावा दिया; धर्मप्रचार के कार्यों पर ध्यान केंद्रित किया।
गुरु हरकशिन	1656-1664	सबसे युवा गुरु; इस्लाम वरिधी ईशानदि के संबंध में औरंगजेब द्वारा इन्हें अपने समक्ष उपस्थित होने का आदेश दिया गया।
गुरु तेग बहादुर	1621-1675	आनंदपुर साहबि की स्थापना की।
गुरु गोबदि सहि	1666-1708	वर्ष 1699 में खालसा पंथ की स्थापना की; इन्होंने एक नया संस्कार "पाहुल" (Pahul) शुरू किया, ये मानव रूप में अंतमि सखि गुरु थे और इन्होंने 'गुरु ग्रंथ साहबि' को सखियों के गुरु के रूप में नामित किया।

## UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न (PYQs)

????????

प्रश्न. नमिनलखिति भक्ति संतों पर वचिार कीजयि: (2013)

1. दादू दयाल
2. गुरु नानक
3. त्यागराज

इनमें से कौन उस समय उपदेश देता था/देते थे जब लोदी वंश का पतन हुआ तथा बाबर सत्तारुढ़ हुआ?

- (a) केवल 1 और 3
- (b) केवल 2
- (c) केवल 2 और 3
- (d) केवल 1 और 2

उत्तर: (b)

